वार्तालाप - 644 फरूर्खाबाद (उ.प्र.), तारीख - 7.10.08

Disc.CD No.644, dated 7.10.08 at Farrukhabad (Uttar Pradesh)

समय - 03.40

जिज्ञासु - बाबा, 108 में जाने के लिए कितना पुरूषार्थ करना पडेगा? क्या करना पडेगा?
बाबा - 108 में जाने के लिए वो सारा पुरूषार्थ करना पडे जो राजयोग की पढ़ाई पढ़नेवालों के लिए बाबा वाणी में बताते है क्योंकि राजयोग की पढ़ाई पढ़नेवाले ही 108 राजा बनते है। पढ़ाई नहीं पढेंगे या कम पढ़ाई पढ़ेंगे तो राजा नहीं बनेंगे, राजघराने में जन्म ले सकते है। प्रिंस या प्रिंसेज बन करके रह जाऐंगे परंतु राजा नहीं बनेंगे। इसलिये प्रैक्टिकल जीवन में बाप की जो पढ़ाई हुई पढ़ाई है वो अच्छी तरह उतरनी चाहिए। ये 108 राजाओं की माला उन आत्माओं की यादगार है जिन आत्माओं को सारी दुनिया के हर धर्म के लोग याद करते है। हर धर्म में माला घुमाई जाती है। माला के एक-एक मणके को स्मरण करते हैं। तो उन्होंने पढ़ाई को विशेष महत्व दिया होगा। तब तो सारी दुनिया उनको याद करती है। भगवान के साथ उनका भी स्मरण किया जाता है क्योंकि बाप उन बच्चों को आप समान बना करके जाते हैं।

Time: 03.40
Student: Baba, how much *purusharth* (special effort for the soul) will we have to make to become a part of (the rosary of) 108? What will we have to do?
Baba: In order to become a part of 108 you will have to make all those special effort for the soul which Baba mentions in the *Vani* for those who study *Rajyog* because only those who study *Rajyog* become 108 kings. If they do not study or study less, then they will not become kings; they may take birth in the royal family. They may become Prince or Princess, but they will not become kings. That is why in the practical life the knowledge taught by the Father should be implemented properly. This rosary of 108 kings is the memorial of those souls, whom the people of every religion of the entire world remember. The rosary is rotated in every religion. They remember every bead of the rosary. So, they (those who become a part of the rosary of 108) must have given special importance to the study. Only then does the entire world remember them. They too are remembered along with God because the Father departs after making them equal to Him.

निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी रूद्रमाला के मणके बनते है। रूद्र शंकर को कहा जाता है। ये 108 दुनिया का कल्याण करने के लिए रौद्र रूप भी धारण करते है। परंतु दुनिया के उपर रौद्र रूप बाद में धारण करते है, पहले अपने लिए रूद्र बन जाते है। (किसी ने कहा - अपने लिए कैसे?) फुल बेगर टु फुल प्रिंस। फुल बेगर नहीं बनेंगे तो फुल प्रिंस भी नहीं बनेंगे। तन, मन, धन, सब तेरा। सिर्फ कहने-कहने के लिए नहीं, प्रैक्टिकल जीवन में ऐसा करके दिखाए जो खुद को भी संतुष्टि हो और दुनिया वाले भी कहे कि इसका जीवन जितना अर्पणमय बना है और जितना बड़ा ज्ञान का दर्पण बना है, इतना दुनिया में माला के मणकों के अलावा और कोई नहीं बन सकता।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

The beads of the *Rudramala* (the rosary of *Rudra*) become incorporeal, vice less and egoless. Shankar is called *Rudra.* These 108 also assume a ferocious form to bring benefit to the world. But they assume the *Raudra* (ferocious) form for the world later on; first they become *Rudra* for themselves. (Someone said – How for themselves?) Full beggar to full prince. If they do not become full beggar, they will not even become full prince. Body, mind, wealth, everything is yours. Not just for namesake; they should do such a thing in their practical life that they are satisfied themselves and the people of the world would also say that the extent to which he has lead a dedicated life and the extent to which he has become a mirror of knowledge, none other than these beads of the rosary in the world can become to that extent.

समय - 09.05

जिज्ञासु - बाबा, पहले बी.के में जब जाते थे ता वहां पर यही शिक्षा मिली कि भई, कृष्ण और राधा वही नारायण और लक्ष्मी बनते है। यहां भट्ठी में आने के बाद ये पता चला कि राम और सीता वही नारायण और लक्ष्मी बनते है। इसको प्लीज खोलेंगे, खोल के बताइए थोडा-सा।

बाबा - मुरली में तो यही बोला है, जो लक्ष्मी-नारायण बनते है वो ही राम-सीता बनते है। अब बेसिक वालों को ये पता नहीं है कि इस जीवन में जीतेजी ऐसा पुरूषार्थ किया जा सकता है, जो यहीं नर से नारायण बन जावेंगे। वो समझते है जैसे ब्रह्मा बाबा शरीर छोड कर गए, अगले जन्म में जाकर नारायण बनेंगे, तो जैसी पढ़ाई पढ़ी है और जितनी पढ़ाई पढ़ी है, उतनी ही प्राप्ति होगी। और वहां पढानेवाली मां थी या बाप था? हैं? (किसी ने कुछ कहा) तो माता जो पढ़ाई पढ़ाती है वो प्राइमरिली पढ़ाई पढ़ाती है, बेसिक की पढ़ाई पढ़ाती है, हायर क्लासेस में पढ़ाती है? बेसिक की पढ़ाई पढ़ाती है, तो बेसिक ही पद बनेगा।

Time: 09.05

Student: Baba, earlier when we used to go to the BKs, there, we were taught that Krishna and Radha themselves become Narayan and Lakshmi (respectively). After coming to do the *bhatti* here we came to know that Ram and Sita themselves become Narayana and Lakshmi (respectively). Will you please elaborate on this point a little?

Baba: It has been said in the *Murlis* that those who become Lakshmi-Narayan, they themselves become Ram-Sita. Well, those who follow the basic knowledge do not know that in this life while being alive, we can do such *purusharth* that we will transform from a man to Narayan here indeed. They feel that just as Brahma Baba left his body, just as he will go and become Narayan in the next birth; so, the manner and the extent to which they have studied the knowledge, they will achieve the attainments to the same extent. And there, was the mother or the father, the teacher? (Someone said something) So, the knowledge that the mother teaches, does she teach primary knowledge, basic knowledge, or does she teach the (knowledge of) higher classes? She teaches the basic knowledge; so the post that they will achieve will also be basic only.

उनके सामने जो लक्ष्य था, वो प्रैक्टिकल जीवन में ब्रह्मा बाबा थे और यहां एडवान्स में जो लक्ष्य है वो स्वयं बाप है। वो आत्माओं का भी बाप है और मनुष्यों का भी बाप है। उनके द्वारा हमको सुप्रीम टीचर के रूप में उंच ते उंच पढ़ाई मिल रही है के मरने के बाद इस

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

पढ़ाई का रिजल्ट नहीं मिलेगा। यहीं पढ़ाई पढ़नी है, यहीं रिजल्ट निकलेगा, यहीं पद मिलेगा। पढ़ाई इस जन्म में पढे और कलेक्टर, मिनिस्टर, वकील और इंजिनीयर अगले जन्म में बने, ऐसी पढ़ाई कोई अंधश्रद्धालु भक्त ही पढ़ता होगा। यहां तो बाप ज्ञान सिखाते है। ज्ञान मने समझ। भक्ति में तो ज्ञान नहीं होता है। भक्ति में होता है अज्ञान, अंधश्रद्धा, अंधविश्वास।

The target that was in front of them for the practical life was Brahma Baba and the goal here in advance (party) is the Father himself. He is the Father of the souls as well as the father of the human beings. Through him we are receiving the highest knowledge in the form of the Supreme Teacher (so) that we will not get the result of this knowledge after death. We have to study here only; the result will be out here itself and we will get the post here itself. If we study knowledge in this birth and if we become a collector, a minister, an advocate and an engineer in the next birth, then, only a superstitious devotee must be studying such knowledge. Here the Father teaches the knowledge. Knowledge means understanding. There is no knowledge in *bhakti* (devotion). There is ignorance, blind faith in *bhakti.*

समय - 18.20

जिज्ञासु - 9 सितम्बर 2008 की मुरली चली थी। उसमें था सबसे पहले मीठे बच्चे, फिर प्रश्न-उत्तर, फिर ओम् शांति, उसमें एक ये आया था कि प्रजापिता ब्रह्माकुमार एन्ड कुमारियां। इसको प्लीज खोल के बताऐंगे? हमें कई बार अंदर से भाव आया कि पूछे पर कई लोगों ने बोला कि नहीं, नहीं, यहां बिल्कुल नहीं पूछना। सही नहीं है। उधर तो नहीं पूछा, इसलिए यहां पूछ रहे है।

Time: 18.20

Student: A *Murli* dated 9th September, 2008 was narrated. In that, first of all there was a mention about sweet children; then question and answer; and then om shanti. There was a mention about Prajapita Brahma Kumar and Kumaris in it. Will you please elaborate on this point? Many a times I felt from within to ask (the BKs), but many people (BKs) said: No, no, don't ask here at all. It is not proper. I did not ask there; that is why I am asking here.

बाबा - जो अम्मा कुमार होंगे वो अम्मा की ही बात करेंगे। जहां बाप की बात आएगी प्रजापिता की बात आएगी तो मुंह बंद करवाऐंगे या नहीं? कोई-कोई बच्चे होते हैं जिनसे पूछा जाता है 'तुम अपना परिचय दो', तो कर्ण की तरह अपना परिचय देने में शरमाते हैं। उनको अपनी अम्मा का तो पता है लेकिन बाप का पता ही नहीं है तो बताए कहां से। और बाप की पहचान माना ज्ञानी। अगर बाप की पहचान नहीं, तो अज्ञानी, नास्तिक हो जाता है। जो रचयता बाप को और उसकी रचना को जानता है वो ही आस्तिक है। जो नहीं जानता, वो नास्तिक है।

Baba: Those who are the children of the mother will talk only of the mother. Wherever there is a mention of the father, wherever there is a mention of Prajapita will they ask you to shut your mouth or not? There are some children, when they are asked 'give your introduction'; they feel shy to introduce themselves like *Karna* (a character from the Mahabharata epic). They do know about their mother, but they do not know about their father at all. So, how will they tell? And the one who has the recognition of his father is called a knowledgeable one. If

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

there is no recognition of the father, then he becomes an ignorant person, an atheist. Only the one who knows the creator father and his creation is a theist. The one who does not know is an atheist.

मुरली में भी बोला हुआ है, 'तुम बच्चों को अपन को ब्रह्माकुमार-कुमारी नहीं कहना चाहिये। कहना चाहिये हम प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारी है।' पहले आश्रम के नाम से भी प्रजापिता नहीं जोडा जाता था क्योंकि जो ब्रह्माकुमारी आश्रम का नाम है वहां आश्रम के कोई को भी ये पता ही नहीं था कि प्रजापिता भी कोइ चीज होती है। जैसे छोटे बच्चे होते हैं, शिशु, उनको अपनी अम्मा का तो ज्ञान होता है, बाप की पहचान नहीं होती। ऐसे ही वो बेसिक ज्ञान में चलनेवाले सब छोटे-छोटे शिशु हैं। वो जिनको अपना सरपरस्त मानते हैं, मुखिया मानते हैं, उसके लिए ही मुरली में बोल दिया, 'ये कृष्ण तो बच्चा है।' माने बच्चाबुद्धि है। ये बाप नहीं है।

It has also been said in the *Murli*, 'You children should not call yourself Brahmakumar-kumari. You should say: we are Prajapita Brahmakumar-kumaris." Earlier the word Prajapita wasn't used to be prefixed to the *ashram's* name because nobody at the Brahmakumari *Ashram* knew it at all that there is someone called Prajapita. Just as there are small children; infants, they do know about their mother, but they do not know their father. Similarly, those who follow the basic knowledge are small infants. The one whom they consider as their head, their chief, it has been said just for him in the *Murlis* : 'this Krishna is a child, i.e. he has a child-like intellect. He is not the father.

राम बाप को कहा जाता है। तो दुनिया में भी बच्चों के सामने बाप पहले प्रत्यक्ष होता है या मां प्रत्यक्ष होती है। (किसी ने कहा - बाप पहले प्रत्यक्ष होता है।) बाप पहले प्रत्यक्ष होता है? (किसी ने कहां - मां) दुनिया में जो बच्चें पैदा होते है उनका परिचय पहले मां से होता है कि पहले बाप से होता है? मां से होता है। तो मां को तो पहचाना लेकिन बाप की पहचान मिलते हुये भी नहीं पहचाना। इसलिए वो नास्तिक संप्रदाय है।

Ram is called the father. So, even in the world, is the father revealed before the children first or is the mother revealed? (Someone said – the father is revealed first) Is the father revealed first? (Someone said – mother) Are the children who take birth in the world introduced to the mother first or to the father first? They are introduced to the mother first. So, they did recognize the mother, but they did not recognize the father despite receiving the knowledge about him. That is why they belong to the atheist community.

जिज्ञासु - बेसिक वाले कहते है कि जैसे पूछते है ना कि हमारी ब्रह्मा तो मां थी, बाप कौन है? कह रहे है मां भी हमारी यहीं है और पिता भी हमारा यहीं है। मैंने कहा ऐसे तो नहीं हो सकता।

बाबा - तो मुरली में तो बोला है कि ब्रह्मा, अम्मा से वर्सा नहीं मिलता। वर्सा किससे मिलता है? बाप से ही मिलता है। तो अगर ब्रह्मा ही तुम्हारी मां है, वो ही बाप है तो नयी दुनिया

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

का वर्सा जीतेजी तुमको नहीं मिलेगा। इसलिए ब्रह्माकुमार-कुमारी जितने भी पुराने-पुराने है वो सब शरीर छोडते जा रहे हैं।

Student: When we ask those who follow the basic knowledge: our mother was Brahma; so who is our father? They say: He (Brahma) is our mother as well as our father. I said, this cannot be possible.

Baba: So, it has been said in the *Murli* that we do not receive the inheritance through Brahma, the mother. Through whom do we receive the inheritance? We receive it only through the Father. So, if Brahma alone is your mother as well as your father, then you will not attain the inheritance of the new world while being alive. That is why all the old Brahmakumar-kumaris who are there, they are leaving their bodies.

समय - 29.18

जिज्ञासु - बाबा, विष्णु को भी सांप दिखाते है और शंकर को भी सांप दिखाते है। इसका अर्थ क्या है?

बाबा - दोनों का सम्पन्न रूप दिखाया गया है। अभी तो बताया, सौ बगुलों के बीच एक हंस अपनी मस्ती में बना रहे। कोइ उसको संग का रंग न लगे। जैसे चंदन के वृक्ष के लिए कहते है, 'चंदन विष व्यापत् नहीं, लिपटे रहत भुजंग।' जो शंकर का रूप है या विष्णु का रूप है, वो सम्पन्न रूप है पुरूषार्थ का। ऐसे नहीं कि विकारियों के साथ रहता नहीं है। विश्व का कल्याण करना है या नहीं करना है? करना है। तो किसके बीच में रहना है? सांपों के बीच में रह करके उनसे प्रभावित नहीं होना है।

Time: 29.18

Student: Baba, Vishnu as well as Shankar are shown with snakes. What does it mean?

Baba: The complete form of both of them has been depicted. Just now it was said, a swan (*hans*) should remain in his intoxication (even) in the midst of a hundred herons (*bagula*). He should not be colored by the company. Just as it is said for the sandalwood tree, '*chandan vish vyaapat nahee, liptey rahat bhujang*' (although serpents remain entwined around it, the sandalwood tree does not become poisonous). The form of Shankar or the form of Vishnu is the complete form of their *purusharth* (special effort for the soul). It is not that he does not live with the vicious people. Has he to bring about the benefit of the world or not? He has to. So, among whom should he live? He has to remain unaffected while living in the midst of snakes.

जिज्ञासु - बाबा, एक प्रश्न है कि कोई (में) विष्णु समान संस्कार हैं, कोई के जन्म-पत्री में आदि से अंत तक स्थापना के निमित्त बनने का संस्कार हैं, कोई के पालना के संस्कार हैं। इसका अर्थ क्या है?

बाबा - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। ब्रह्मा है स्थापनाकारी, शंकर है विनाशकारी और विष्णु है पालनाकारी। तो तीन प्रकार की आत्माऐं हैं ब्राह्मण परिवार में खास करके। कोई के स्थापना के संस्कार हैं। अपने जीवन में दिव्य गुणों की स्थापना अच्छी कर लेते हैं। ऐसा पक्का फाउन्डेशन डालते हैं ब्राह्मण जीवन का जो ब्राह्मण ही दिखाई पड़ता है।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: Baba, there is a question that some have the *sanskars* of Vishnu; some have the *sanskars* of establishment from the beginning to the end in their horoscope; some have the *sanskars* of sustenance. What does it mean?
Baba: Brahma, Vishnu, Shankar. Brahma does the establishment; Shankar causes destruction and Vishnu does sustenance. So there are especially three kinds of souls in the Brahmin family. Some have the *sanskars* of establishment. They establish divine virtues in their life nicely. They lay such a strong foundation of the Brahmin life that they appear to be only Brahmins.

कोई के ऐसे संस्कार हैं कि स्थापना तो नहीं कर पाते उतनी अच्छी, दिव्य गुणों को धारण तो नहीं कर पाते, लेकिन ज्ञान अच्छा सुना लेते हैं और सुन सकते हैं, समझ सकते हैं। ऐसे ज्ञानी हैं, जो एक सेकंड में किसी की बुद्धि को घुमाय सकते हैं। दुनिया ही बदल देते हैं। पुरानी दुनिया से कनेक्शन टूट जाता है और नये ब्राह्मणों की दुनिया से कनेक्शन जुट जाता है बुद्धि का। ऐसे तीव्र ज्ञानी त्रिनेत्री के बच्चे, उनमें दुर्गुणों के विनाश के संस्कार हैं। जो भक्तिमार्ग की अंधश्रद्धा वाली परम्पराऐं हैं, उनको एक सेकण्ड में नष्ट करवाए देते हैं।
Some have such *sanskars* that they are unable to do good establishment to that extent; they are unable to imbibe divine virtues but they narrate and can listen to knowledge well, they can understand it (knowledge). They are such knowledgeable ones that they can change the intellect of anyone in a second. They change the very world. Their intellect disconnects with the old world and connects with the new world of Brahmins. Such sharp knowledgeable children of the three-eyed (*trinetri*) one have the *sanskars* of destroying the bad qualities. They destroy the traditions of *bhaktimarg* (path of devotion) that are based on blind faith, in a second.

तीसरे वो हैं जो दिव्य गुणों की पालना करने वाले हैं। एक बार कोई आत्मा ने दिव्य गुण धारण कर लिए तो वो दिव्य गुणों को धारण करने वाली आत्मा वैष्णव परिवार से बाहर नहीं जा सकती। त्याग-पत्र नहीं दे सकती। पक्की पालना करते हैं। अभी क्या होता है? अभी ज्ञान भी धारण कर लेते हैं, एडवांस में आ भी जाते हैं, थोडे समय के बाद टूट जाते हैं, अनिश्चय बुद्धि बन जाते हैं। जो विष्णु की पालना की दुनिया होगी, उसमें मृत्यु किसी की नहीं होगी। क्या? उनको अमर कहेंगे। कोई भी अनिश्चय-बुद्धि की मौत में मरनेवाला नहीं होगा। ऐसी पालना मिलेगी।
Third are the ones who sustain divine virtues. Once a soul imbibes divine virtues, then that soul which imbibes divine virtues cannot leave the *Vaishnav* family. It cannot resign. They give strong sustenance. What happens now? Now [children] imbibe knowledge as well as enter (the path of) advance (knowledge), and then break away after some time. They become of a doubtful intellect. In the world of Vishnu's sustenance, nobody will die. What? They will be called immortal. Nobody will die in the form of having a doubtful intellect. They will receive such sustenance.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय - 35.14

जिज्ञासु - बाबा, करूणा की धारा में अपने विवेक को खो देना, उसका अर्थ क्या है?

बाबा - करूणा कहते हैं दया को। जिनमें दूसरों के ऊपर दया करने के संस्कार होते हैं, उनको अधर्मी नहीं कहा जाता। करूणा की धारा ना। दया जो है वो कोई भी सत् धर्म का मूल है। इसलिए जो करूणा की नदी, दया की नदी है, वो बहना कभी बंद नहीं होना चाहिये। जो भी सामने आए, कोई कैसे भी संस्कार वाला हो, कैसी भी खराब दृष्टि वाला हो, कैसे भी दुष्ट कर्म करने वाला हो, उसके प्रति मन में शुभ भावना रहे कि इसका भी कल्याण हो जाए। बाकी ऐसे भी नहीं कि उसके संग के रंग में आ जाना है, ये कोई करूणा भाव है। इसको करूणा भाव नहीं कहा जाता कि अपना अकल्याण कर ले और दूसरे का कल्याण कर दे। अपनी भी सेफ्टी रखनी है। 'धर्मो रक्षति रक्षतः'। धर्म वो ही है, जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। वो धर्म धर्म नहीं है जो रक्षा न करे। डुबो दे।

Time: 35.14

Student: Baba, what is the meaning of losing our wisdom in a stream of mercy?

Baba: Mercy means compassion. Those who have a *sanskar* of showing compassion for others are not called irreligious. It is the stream of mercy, isn't it? Mercy is the root of any true religion. That is why the river of mercy, the river of compassion should never stop flowing. Whoever comes in front of us, whatever kind of *sanskars* he may have, whatever kind of bad vision he may have, whatever kind of wicked acts he may be performing, there should be a good feeling for him in our mind that he should also be benefited. However, it is not that we should come in the color of his company (thinking) this a feeling of mercy. If we harm ourself and bring benefit to the others then it will not be called a feeling of mercy. We have to ensure our safety too. '*Dharmo rakshati rakshatah'*. Only that is a religion in which the religion defends the one who defends the religion. That religion is not a religion which does not protect us and drowns us.

समय - 38.45

जिज्ञासु - बाबा, जब पार्टी लाते हैं, तो उनको समझा के लाते हैं कि ये ताजमहल वगैरे देखना नहीं है। लेकिन फिर भी वो जिद कर लेते हैं या देखने जाना चाहते हैं तो उसमें लाने वाले का क्या दोष?

बाबा - लानेवाले का ये दोष है कि उसने भगवान की पहचान नहीं दी है, तो बुद्धि इधर-उधर भटक रही है। जिनको भगवान की पहचान हो जाएगी, वो भगवान के पीछे मतवाला होकर के दौडेगा। ये ताजमहल वगैरे तो मनुष्यों के बनाए हुए वन्डर्स हैं। ये सब विनाशी हैं। भगवान तो दुनिया का ऐसा वन्डरफुल काम करता है, ऐसी वन्डरफुल दुनिया बनाता है जो स्वर्ग की दुनिया और कोई मनुष्य मात्र नहीं बना पाता। मोस्ट वन्डर ऑफ द वर्ल्ड है स्वर्ग। वो पहचान नहीं दी है। इसलिए बुद्धि इधर-उधर दौडती है।

Time: 38.45

Student: Baba, when we bring a party (for *bhatti*), we explain to them that they should not visit Taj Mahal etc. (tourist sites). But still they put pressure for the same or they wish to go to see (Taj Mahal etc.); then, is it a mistake on the part of the one who brings them?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: The mistake of the one who brought them is that he has not given the (complete) recognition of God; so their intellect is wandering here and there. Those who recognize God will run after God in intoxication. These Taj Mahal etc. are the wonders created by the human beings. All these are perishable. God performs such wonderful task in the world, creates such a wonderful world that no other human being is able to create such a heavenly world. The most wonder of the world is heaven. That recognition has not been given; that is why the intellect runs here and there.

समय - 40.30

जिज्ञासु - बाबा, अंत में माया सबको हिलाएगी।

बाबा - अंत में हिलाएगी, अभी नहीं हिलाती है?

जिज्ञासु - जिससे बहुत बच्चे अनिश्चय के चक्र में चले जाऐंगे।

बाबा - हांजी, हांजी। फायनल पेपर होगा।

जिज्ञासु - बाबा, लेकिन एन.एस. वाले अनिश्चय के चक्र में आऐंगे या नहीं?

बाबा - अरे, जो नयी दुनिया का फाउन्डेशन पड रहा है, गड्ढे में फाउन्डेशन डाला जाता है और उपर से दुरमुट से कुटाई होती है। तो जो पत्थर या ईटें या कंकड़ जिनकी कुटाई होगी तो टूट-फूट के इधर-उधर बिखर नहीं सकते? हैं? जो कच्चे होंगे वो टूट के बिखरेंगे और जो पक्के होंगे वो फाउन्डेशन पक्का जमाऐंगे। हिलेंगे नहीं। इसलिए नयी दुनिया के फाउन्डेशन में कितने निकलते हैं? आठ ही निकलेंगे। बाकी कुछ न कुछ टूटेंगे जरूर। अनिश्चय बुद्धि बनेंगे जरूर।

Time: 40.30
Student: Baba, *Maya* will shake everyone in the end.
Baba: Will it shake in the end? Is it not shaking now?
Student: Many children will become (of) doubtful (intellect) because of that.
Baba: Yes, yes. It will be the final paper.
Student: Baba, but will those living in the NS come in the cycle of doubt or not?
Baba: Arey, when the foundation for the new world is laid; the foundation is laid in a pit and when the stones (put in the pit) are beaten with a *durmuth* (rammer), then can't the stones or bricks or pebbles which will be beaten, break and scatter here and there? Hum? The weak ones will break and scatter and the strong ones will strengthen the foundation. They will not shake. That is why, how many emerge in the foundation of the new world? Only eight will emerge. As regards the rest, they will definitely break to some extent or the other. They will certainly become of a doubtful intellect.

समय - 44.35

जिज्ञासु - बाबा, 'भाव प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करे सो तस फल चाखा'', इसका अर्थ क्या हुआ?

बाबा - इसका मतलब ये हुआ कि अंदर से भाव शुद्ध है। क्या? शुद्ध भावना है कि दुनिया का नम्बरवार कल्याण जल्दी हो जाए। और विनाश का काम करे। क्या? काम क्या करे? सारी दुनिया के विनाश का निमित्त बन जाए और अंदर में ये भाव है कि नयी दुनिया बन जाए,

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो पाप लगेगा या पुण्य लगेगा? हैं? भाव अच्छा हुआ या भाव खराब है? हैं? भाव अच्छा है। नयी दुनिया बनेगी तो सब आत्माऐं शांतिधाम जाऐंगी। कम-से-कम, नयी दुनिया का सुख नहीं मिलेगा तो इस पुरानी दुनिया के दु:ख से तो छूट जाऐंगे। शांतिधाम में तो सब चले जावेंगे। तो मन में भाव अच्छा रहना चाहिये। कर्म चाहे कैसा खराब हो। भावना अच्छी होनी चाहिये।

Time: 44.35

Student: Baba, '*Bhaav pradhaan vishwa rachi raakha, jo jas karey so tas fal chaakha'* what does it mean?

Baba: It means that the inner feelings are pure. What? The feelings are pure that the world should be benefited soon number wise; but he performs the task of destruction. What? Which task does he perform? He becomes instrument in destroying the entire world and in his mind he has a feeling that the new world should be made; so will he accumulate sins or nobleness? Hum? Was his feeling good or bad? Hum? The feeling is good. When the new world is created, all the souls will go to the Abode of Peace *(Shantidham)*. If they don't receive the happiness of the new world, at least they will be liberated from the sorrows of this old world. Everyone will indeed go to the Abode of Peace. So, we should have good feelings in the mind; it does not matter how bad the actions are, the feeling should be good.

जिज्ञासु - बाबा, पांच पांडवों को कुन्ती ने जन्म दिया.....

बाबा - पांच पांडवों को कुन्ती ने जन्म नहीं दिया। गड़बड़ कर दिया सुनने में।

बाबा - कुन्ती ने तीन पांडवों को जन्म दिया। और दूसरी माता भी थी माद्री। उसने बाकी दो पांडवों को जन्म दिया। हां, तो?

Student: Baba, *Kunti* gave birth to the five *Pandavas*…

Baba: *Kunti* did not give birth to five *Pandavas*. You did a mistake in hearing.

Baba: *Kunti* gave birth to three *Pandavas*. And there was also another mother named *Madri*. She gave birth to the remaining two *Pandavas*. Yes, so?

जिज्ञासु - उसका शूटिंग कहां होगा?

बाबा - यहीं हो रही है। पांच मुख्य धर्म है स्वधर्मी। देवता धर्म के दो छेडे। एक सूर्यवंश, एक चंद्रवंश। और स्वधर्मी है, विधर्मियों के बीच में जो पक्का स्वदेशी भी है परंतु विधर्मी हो जाता है, बौद्धी धर्म। बुद्धिमान बाप का बुद्धिमान बच्चा है। ऐसा बुद्धिमान है, जो धर्म की ऐसी धारणाऐं संसार को सिखाता है, जिन धारणाओं को धारण करने वाला पापी नहीं बन सकता। सिर्फ एक धारणा को छोड़ करके। पवित्रता की जो बेहद की परिभाषा है, वो नहीं जानता। इसलिए जो भी भारतीय धर्म है, उनमें सबसे ऊंच दृष्टि और वृत्ति रखने वाला बौद्ध धर्म, जिसके संस्थापक महात्मा बुद्ध हुए। उन्होंने आत्मा, परमात्मा का कहीं भी जिक्र नहीं किया, स्वर्ग का भी कहीं जिक्र नहीं किया। परंतु जो धर्म की धारणाऐं है वो बहुत अच्छी फैलायी। तो बुद्धिमत्ता का काम किया ना।

Student: Where will its shooting take place?

Baba: It is taking place here itself. Five main religions are *swadharmis* (those who have inculcations as that said by the Father). There are two divisions of the deity religion. One is

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

the Sun dynasty (*suryavansh*), the other is the moon dynasty (*chandravansh*). And the one who is firm *swadeshi* among the *vidharmis* (those who have inculcations opposite to that said by the Father), but becomes a *vidharmi*, is the *swadharmi* Buddhism. He is the intelligent child of the intelligent father. He is so intelligent that he teaches such inculcations of religion to the world that the one who inculcates those virtues cannot become sinful except for one inculcation. He does not know the definition of purity in an unlimited sense. That is why Buddhism, which is the religion that maintains highest vision and vibration among all the Indian religions and whose founder is Mahatma Buddha, did not mention about the soul and the Supreme soul anywhere; he did not mention about the heaven anywhere either. But he spread the inculcations of religion very nicely. So, he performed a task of intelligence, didn't he?

आज भी बौद्धी लोग बहुत हट्टे-कट्टे और सुखी दिखाई देते हैं। भल उन्होंने इस सृष्टि पर ज्यादा लम्बे समय तक राज्य नहीं किया है, फिर भी सुखी दिखाई देते हैं। इसलिए उनके चित्र पांडवों की तरह बड़े-बड़े चित्र बनाए जाते हैं। महात्मा बुद्ध का चित्र भीमसेन की तरह बड़ा दिखाया जाता है। कोई शरीर से बडे होने की बात नहीं है, बुद्धि उनकी इतनी विशाल थी।

Even today Buddhists appear to be physically very strong and happy. Although they did not rule this world for a long time, yet they appear to be happy. That is why their pictures are made very huge in size like that of the *Pandavas*. The picture of Mahatma Buddha is shown to be huge like that of *Bheemsen* (*Bhim*, one of the brothers among the *Pandavas*). It is not an issue of being large physically. Their intellect was so broad.

जैसे पांडवों को विशाल बुद्धि दिखाया जाता है, छत इतने उंचे उनकी मूर्तियां बनाई जाती है। तो तीन पांडव मुख्य है जो कुन्ती की औलाद हैं। एक है युद्धिष्ठिर जो युद्ध में आदि से लेकर के अंत तक दिव्य गुणों की धारणा के कारण स्थिर रहता है। और दूसरा है, भीम। 'भीम कर्मा व्रकोदर', भयंकर कार्य करता है। सौ कौरवों को भी मारता है, सौ कीचकों को मारने का निमित्त बनता है और बड़े-बड़े राक्षसों को भी धराशायी करता है। सामना करने की शक्ति बहुत है। युद्धिष्ठिर में जैसे सहनशक्ति बहुत है, वैसे भीम में सामना करने की शक्ति बहुत है। और तीसरा पांडव है अर्जुन जिसने बुद्धिमत्ता के कारण श्रेष्ठ पुरूषार्थ का अर्जन किया जन्म-जन्मांतर के लिये। ये तीन कुन्ती पुत्र कहे जाते है।

For example, the *Pandavas* are shown to have a broad intellect; their statues are built such that they reach the height of the roof. So, three main *Pandavas* are *Kunti's* children. One is *Yudhishthir*, who remains stable in the war (*yuddh*) from the beginning to the end because of the inculcation of divine virtues. And the second is *Bhim*. '*Bhim karma vrakodar'[Bhim's actions are like that of a wolf]*; he performs dangerous acts. He becomes instrumental in killing the hundred *Kauravas* as well as the hundred *Keechaks* (the villain who set his evil eyes over *Draupadi*) and he kills huge demons as well. He has a lot of power of confrontation. Just as *Yudhishthir* has a lot of power of tolerance, *Bhim* has a lot of power of confrontation. And the third *Pandava* is *Arjun*, who earned righteous *purusharth* (special effort for the soul) for many births because of his intelligence. These three are called the sons of *Kunti*.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

(किसी ने कहा - तो भीम कौन है, बेसिक में?) जो राम वाली आत्मा है वो ही भीम का पार्ट है। कृष्ण वाली आत्मा दिव्य गुणों को धारण करने वाली है, धर्म के युद्ध में स्थिर रहने वाली है। और बुद्धिमान नर अर्जुन, जो भी मनुष्य हैं उन मनुष्यों में वो ही बुद्धिमान माना जाता है जो भगवान जैसे चलाए वैसे चले। अपनी बुद्धि का भी उपयोग न करे। अर्जुन, अर्जन करनेवाला भगवान के बताए अनुसार। तो भगवान के पास क्या है? हैं? धन है, सम्पत्ति है, क्या चीज है? भगवान के पास ऐसी मत है, मती मने बुद्धि, जिसे श्रीमत कहा जाता है। उस श्रेष्ठ मत को महात्मा बुद्ध की जो आधारमूर्त आत्मा है वो धारण करने में सबसे आगे जाती है। इसलिए उसको अर्जुन नाम दिया गया है।

(Someone said – So, who is *Bhim* in basic knowledge?) The soul of Ram himself plays the part of *Bhim*. The soul of Krishna inculcates the divine virtues, remains constant in the fight for religion. And the intelligent man *Arjun*, who is considered to be intelligent among all the human beings; the one who acts according to the wishes of God. He does not even use his intellect. *Arjun* is the one who earns as per the directions of God. So, what does God have? Hum? Does he have wealth, does he have property? What does he have? God has such opinion (*mat*); *mati* means intellect, which is called *shrimat* (the highest opinion). The root soul of Mahatma Buddha goes ahead of everyone in imbibing that righteous opinion. That is why he has been given the name *Arjun*.

बाकी रह गए दो, भारतीय। एक नकुल और एक सहदेव। बहुत पावरफुल धर्म है क्योंकि जीवन में पवित्रता को विशेष महत्व देता है। भल पवित्रता की बेहद की परिभाषा पता नहीं है, इसलिए जन्म-जन्मांतर प्युरिटी को फॉलो करने के कारण आखरी जन्म में जब भगवान बाप आते हैं तो भगवान के बच्चों को उन नकुल का आधार लेना पडता है। इसलिए बोला है, 'बड़े-बड़े सन्यासी जब निकलेंगे तो तुम बच्चों की विजय हो जावेगी।' नहीं तो ऐसे ही नाक रगडते रहना पडेगा। (किसी ने कहा - ज्ञान में कौन है?) नकुल कौन है? नकुल में, नाम इसलिए रखा गया कि दुनिया के जितने भी विष उगलने वाले सर्प है अपवित्रता को फॉलो करने और करानेवाली। इस्लामी, क्रिश्चियन्स, मुस्लिम, उन सर्पों को टुकडा-टुकडा कर देते हैं। इसलिए उनको नकुल कहा जाता है। प्युरिटी की पावर इतनी ज्यादा है।

The remaining are two, (who are) Indians. One is *Nakul* and the other is *Sahdev*. It is a very powerful religion because it gives special importance to purity in its life. Although it does not know the definition of purity in an unlimited sense; that is why because of following purity for many births, when God the Father comes in the last birth, the children of God have to take the support of that *Nakul*. That is why it has been said (by Baba in the *Murlis*), 'You children will gain victory when the big *sanyasis* emerge.' Otherwise, you will continue to rub the nose (entreat abjectly). (Someone said – Who is *Nakul* in knowledge?) Who is *Nakul*? He has been named *Nakul* because he cuts into pieces all those snakes of the world which produce poison, who themselves follow and make others follow impurity, the Islamic people, the Christians, the Muslims. That is why he is called *Nakul*. He has such a power of purity.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

और फिर है सहदेव, आखरी पांडव। उसमें एक शिफ्त है कि सहयोग देगा तो देवताओं को सहयोग देगा। मुसलमानों को या क्रिश्चियन्स को कभी सहयोग नहीं देता। यह संगमयुगी ब्राह्मण जीवन में भी ऐसा ही है। और द्वापर, कलियुगी जो दुनिया होती है वहां भी ऐसा ही पार्ट बजाता है। सिक्ख धर्म। ये नकुल और सहदेव, ये दूसरी रानी माद्री के बच्चे बताए जाते है। दो रानियां प्रसिद्ध है।

And the next is *Sahdev*, the last *Pandav*. He has a quality that if he gives co-operation, he will give it to the deities. He never gives co-operation to the Muslims or Christians. He is like this in the Confluence Age life as well, and he also plays a similar part in the Copper and Iron Age world. Sikhism. This *Nakul* and *Sahdev* are said to be the children of the second queen (of the king Pandu) *Madri*. Two queens are famous.

जिज्ञासु - कुन्ती कौन और माद्री कौन है?

बाबा - कुन्तल कहते है केशों को। जिसके धारणा के केश बहुत अच्छे और श्रेष्ठ है। धारणावान है। कुन्ती का सारा जीवन धारणावान है। और जो धारणावान होता है वो ही अच्छी सेवा करता है। माद्री में उतनी धारणा नहीं थी। उसको कहेंगे मंद बुद्धि। मंद चाल वाली। इसलिए जो पैदाइश हुई वो भी उतनी पावरफुल पैदाइश नहीं हो पाई। फिर भी पंडा बाप के साथ उनका भी बहुत प्यार था।

Student: Who is *Kunti* and *Madri*?

Baba: *Kuntal* means hair (*kesh*). The one, who has very good and righteous hairs of inculcations. She is virtuous. The entire life of *Kunti* is of inculcation of virtues and the one who inculcates virtues does good service. *Madri* did not have that much inculcation. She will be said to have a weak intellect, the one whose intellect works slowly. That is why even her progeny was not so powerful. Even then she had a lot of love for the *Panda* (guide) Father.

एक बाप के पांचों बच्चें। ये कोई पांच पांडवों की बात नहीं है, एक-एक पांडव का बहुत बड़ा ग्रुप है। पांडवों में कोई युद्धिष्ठिर के समान पुरूषार्थ करने वाले हैं, कोई भीम के समान पुरूषार्थ करने वाले हैं, कोई अर्जुन के समान पुरूषार्थ करने वाले हैं, कोई नकुल के समान पुरूषार्थी है। गंगा जब निकलती है, तो पवित्रता की पावर से जन-जन का कल्याण कर देती है। (किसी ने पूछा - गंगा कब तक निकलेगी बाबा?) अंत में निकली। (किसी ने पूछा - अंत में मतलब तो भी कितने बरस तक?) जब स्थापना होनी होती है, तब ही निकलती है।

All the five children belong to one father. It is not a subject of some five *Pandavas*; every *Pandav* has a very big group. Among the *Pandavas* there are some who do *purusharth* (special effort for the soul) like *Yudhishthir*, some do *purusharth* like *Bhim*; some do *purusharth* like *Arjun* and some do *purusharth* like *Nakul*. When Ganga emerges (in knowledge) she brings benefit to every person with the power of purity. (Someone said – When will Ganga emerge Baba?) She emerged in the end. (Someone asked – How many years does 'in the end' refer to?) She emerges only when the establishment has to take place.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

(किसी ने पूछा - गंगा कहां से निकलेगी?) गंगा विष्णु के चरणों से निकलती है, ब्रह्मा के कमण्डल से निकलती है। अभी चरणों में और कमण्डल में बंधी हुई है। जब निकलेगी तो भी शंकर की जटाओं में समाय जाती है। जो सूक्ष्म गंगा है, ज्ञान गंगा, वो 76* से निकलती तो है, लेकिन वो ज्ञान गंगा मनन-चिंतन-मंथन के रूप में शंकर की जटाओं में माने मस्तक में समा जाती है। इसलिए सृष्टि का कल्याण नहीं हो पाता। अभी भी वो ज्ञान गंगा शंकर के मस्तक में, मनन-चिंतन-मंथन में घुमड़ रही है। वो मंथन का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है। कार्य पूरा होगा और गंगा प्रत्यक्ष रूप में प्रत्यक्ष हो जावेगी।

(Someone asked – From where will Ganga emerge?) Ganga emerges from the feet of Vishnu, from the *kamandal* (an earthen/wooden pot used by ascetics to keep water) of Brahma. Now she is bound in the feet and *kamandal*. When she emerges, even then she merges into the hair locks of Shankar. The subtle Ganges, the Ganges of knowledge does emerge in 76, but that Ganges of knowledge merges in the hair locks, i.e. in the intellect of Shankar. That is why the world is not benefited. Even now that Ganges of knowledge is swirling in the intellect of Shankar, in his thoughts and in his churnings. That task of churning is not yet over. As soon as the task is over, the Ganges will be revealed directly.

<u>समय - 01.00.35</u>

जिज्ञासु - बाबा, दिल्ली में जो इंडिया गेट है उसका बेहद का अर्थ क्या है?

बाबा - दिल्ली में?

सबने कहा - इंडिया गेट।

बाबा - इंडिया गेट। 'इंड' 'आ'। दो शब्द है, 'इंड' और 'आ'। उसका नाम पड़ गया इंडिया गेट। भक्तिमार्ग में जो हिस्ट्री है, उस हिस्ट्री में ये बताया जाता है कि इंग्लैण्ड की महारानी, विदेशों की महारानी 'विक्टोरिया', जब भारत में आई थी तो बम्बई के रास्ते से आई थी। जब भारत में कदम रखा, तो उसकी यादगार में इंडिया गेट बम्बई में भी बनाया गया और दिल्ली में भी इंडिया गेट बनाया गया।

Time: 01.00.35
Student: Baba, what does the India Gate situated at Delhi signify in an unlimited sense?
Baba: In Delhi….. (what)?
Everyone said – India Gate.
Baba: India Gate. '*Ind' 'Aa'*. There are two words *'ind'* and '*aa*'. That was named as India Gate. It has been mentioned in the history of the path of devotion that when the Queen of England, the Queen of the foreign countries 'Victoria' visited India, she had come via Bombay. When she stepped into India, India Gate was constructed in her memory in Bombay as well as in Delhi.

वो तो हद की महारानी थी। नाम था विक्टोरिया। और अभी बेहद की महारानी निकलेगी। निकलने मात्र से ही हो जाएगी 'विक्टरी' 'यह'। क्या? विजयमाला की हेड है ना, इसलिए। विदेशों में रहती हे या स्वदेश में रहती है। विदेश में रहती है। इसलिए एक मुरली में बोला है, नाम है तो इंडिया को तो इंडिया में रहना चाहिये। विदेशों में क्यों धक्के खा रही है? हैं?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

(किसी ने कहा - आप बताइए।) आप बताइए? (किसी ने कहा - आपको सब पता है। आप बताइए।) बता तो दिया। जो अच्छे-अच्छे हैण्ड्स होते है वो विदेशों में जा रहे है आखरी जन्म में या भारत में उनकी कदर है? सब विदेशों में जा रहे है, विदेशी सभ्यता को फॉलो कर रहे है। माना सही ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठा है। जब वो सही नॉलेज बुद्धि में बैठ जाएगी तो विदेशों में सेवा करेगी या भारत की सेवा करेगी? भारत की सेवा करेगी। क्योंकि भारत अविनाशी खंड है।

She was a *Maharani* (Empress) in a limited sense. Her name was Victoria. And now the unlimited empress will emerge. Just by her emerging, it will be 'victory' '*yah*' (this is the victory). What? It is because she is the head of the rosary of victory *(Vijaymala)*, isn't she? Does she live in foreign countries or in her own country? She lives in a foreign country. That is why it has been said in a *Murli,* 'when the name is (Miss) India, (Miss) India should live in India'. Why is she wandering in the foreign countries?' Hum? (Someone said – You tell us.) You tell us? (Someone said – You know everything. You say.) It has already been told. Are the nice hands (i.e. talented Indians) going to the foreign countries in their last birth or are they valued in India? All are going to the foreign countries; they are following the foreign culture. It means that the correct knowledge has not fitted in their intellect. When that correct knowledge fits into their intellect, then will she serve the foreign countries or will she serve India? She will serve India because India is an imperishable land.

जिज्ञासु - बाबा, अभी सभी बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ कर रहे है। किसका पुरूषार्थ आगे बढ़ रहा हे ये हमें कैसे पता चलेगा?

बाबा - खुशी रहेगी। कापारी खुशी चढ़ती है मानो अच्छा पुरूषार्थ है। अतिन्द्रिय सुख बढ़ता जावेगा, पुरूषार्थ अच्छा होता जावेगा।

Student: Baba, now all the children are making number wise special effort for the soul *(purusharth)*. How will we come to know, who is progressing in his/her *purusharth*?
Baba: There will be joy. When there is unlimited happiness you can think that his/her *purusharth* is good. The super sensuous joy will go on increasing. The *purusharth* will go on improving.

<u>समय - 01.05.07</u>

जिज्ञासु - बाबा, 'ज्ञान कृपाण पंथ को धारा.....

बाबा - अच्छा।

जिज्ञासु - इसका अर्थ क्या हे बाबा?

Time: 01.05.07
Student: Baba, '*Gyaan kripaan panth ko dhara...*
Baba: I see.
Student: Baba, what does it mean?

बाबा - ज्ञान ऐसी चीज है, अगर ईश्वरीय ज्ञान किसी की बुद्धि में बैठ जाए तो फिर कल्याण होने में देर नहीं लगती है। दुनिया ही पलट जाती है। ज्ञान बुद्धि में नहीं बैठा तो बुद्धि दुनिया में घुमती रहेगी, पुरानी दुनिया में। अगर ज्ञान बुद्धि में बैठ गया, ज्ञान की तलवार गले में

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

लग गई तो देहाभिमान अलग हो जाएगा और आत्माभिमानी सर अलग हो जाएगा। दुनिया बदल जाती है। नयी दुनिया दिखाई पड़ने लगती है। फिर पुरानी दुनिया में दिल नहीं लगती। इसलिए बोला है, 'ज्ञान को पंथ कृपाण को धारा। परत खगेस लगै नहीं बारा।' अगर ज्ञान बुद्धि में बैठ गया तो देर नहीं होती है कल्याण होने में।

Baba: Knowledge is such a thing that if the Godly knowledge fits into someone's intellect then it does not take time to bring benefit to him. The very world transforms. If the knowledge has not fitted in the intellect then the intellect will keep roaming in the world, in the old world. If the knowledge fits in the intellect, if the sword of knowledge hits the neck, then the body consciousness and the soul conscious head will become separate. The world changes (for him). He starts to see the new world. Then he feels no interest in the old world. That is why it has been said, '*Gyaan ko panth kripaan ko dhara. Parat khages lagai nahee bara.*' If the knowledge fits into the intellect then it does not take time to bring benefit.

जिज्ञासु - बाबा, छोटी मम्मी और बाबा को कौन मिलाऐंगे?

बाबा - शिवबाबा जिसको कहा जाता है, वो हमारा बेहद का बाप है या नहीं है? जो हद के बाप होते है वो तो एक जन्म के लिए मिलाते है, वो भी जीवनभर मिल करके रहे या न रहे। कोई गारंटी नहीं। और ये बेहद का बाप तो 21 जन्म की सगाई कराता है। 21 जन्म के लिए मिलाता है। ये मिलाने का काम, टूटे हुए दिलों को मिलाने का काम किसका है? एक बाप का है।

Student: Baba, who will unite junior mother (*choti mummy*) with Baba?

Baba: Is the one who is called Shivbaba our father in an unlimited sense or not? The limited fathers enable the union (through marriage) for one birth; that too is not sure whether they will remain together throughout their life or not. There is no guarantee. And this unlimited Father enables the engagement for 21 births. He enables the meeting for 21 births. This task of uniting…whose is this task of uniting the broken hearts? It is the task of one Father.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info